रात्रिक्लास 11-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

तुम बच्चों को बाप खुद कहते हैं बाहर मे कितना गोरख धंधा आदि हैं। फील करते हैं ना। बहुत ही मित्र सम्बन्धी आदि मिलते हैं। बगुलों का संग हो जाता है। बाप को तो तुम बच्चों के सिवाय और कोई है नहीं। वह तो जैसे रावण सम्प्रदाय हैं। तो बाप दादा को भी कहां जाना अच्छा लगता नहीं है। बाप ने ईशारा दिया है बाहर जाना ठीक नहीं है। इसलिये कहां भी जाने दिल नही होती है। है तो दोनो इकट्ठे। वह भी खुशी रहती है। बाबा तो कहते हैं ना तुम तो शिव बाबा की भाकी पहनते हो। मैं कैसेपहनुं। पहले नम्बर का बच्चा हैयन अपरेन्ट होता है। बाबा भी अपने को हैयरअपरेन्ट समझता है। हम जाकर प्रिन्स प्रिन्सेज बनेंगे। इस में एक तो याद की यात्रा चाहिए और आप समान बनाना है। सर्विस तो बाबा से तुम जरूती करते हो। तुमको लाने वाला बाबा। फिर इतने सभी को लाने वाले तुम। ऐसे2 झाड़ बुधि को पाते रहते हैं। इस झाड़ को ही तूफान लगते हैं। परिपक्वे अवस्था हो गई फिर तूफान की बात रहती नहीं। सभी बच्चों को साक्षात हो जावेंगा। फर्क देखो कितना है। कितने मिस अन्डरस्टैन्ड भक्ति मार्ग में हो गये हैं। जो भगवान बैठ समझाते हैं तो भी बुधि में नहीं बैठता है। शिव बाबा ने क्या आकर किया यह कोई को भी पता नहीं है। शिव के बदलो कृष्ण का नाम डाल दिया है। जो चलाआता है। यह है ड्रामा। कहा जाता है एकजभूल। जो गीता में नाम बदल दिया है। एकजभूल का नाटक कहा जाता है। बाप समझाते हैं तुमने भूल कर दी है। जिस आत्मा को राज योग सिखाया जो भविष्य देवता बनें। उनका नाम गीता में डाल दिया है। इस भूल को निर्नय कर बताया तो तुम्हारी विजय हो जावेंगी। यह बड़ी हाईयेस्ट भूल है। बाप सभी को कहते रहते हैं एकदम लिखो ऐसे। भारत को यह भूलके कारण इतनी गिरावट हुई है। बाप कहते हैं तुम मुझे कितना ठिक्कर भिर में ले गये हो। यदा यदा ... कह नहीं है। यह तो जो लिखा है उस पर बैठ समझाते हैं। कैक्ट करते हैं। आधा कल्प की भूलें हैं। तो वह जल्दी नहीं सुधरती है। समय चाहिए ना। इन बच्चों को भी ऐसे नहीं झट निश्चय हुआ है। इनको भी निश्चय होने में कि शिव बाबा की पधारामणी है कितना टाईम लगा है। बाप गुह्य2 पायन्टस सुनाते रहते हैं। आगे ज्ञान जो सुनाते थे इतना समझते नहीं थे। अभीपायन्टस बहुत मिलता हैं। जिससे अच्छी प्रकार से समझते हैं। दो बाप की थ्योरी पहले नहीं सुनाते थे। गुह्य2 पायन्टस जो निकलती रहती है वह कोई सभी नहीं धारण कर सकते। सभी एक जैसे पढ़ नहीं सकते। नम्बरवार है। बाप रोज2 समझाते रहते हैं तो भी कितने थोड़े समझते हैं। गीता का भगवानकृष्ण नहीं। शिव है। निराकार को याद करने और और साकार को याद करने में बहुत फर्क है। यहां है यह नई बात अपने को आत्मा समझ निराकार ~~बाप~~ ×बाप को याद करना है। आत्मा का पक्का निश्चय होता नहीं तो बाप का भी निश्चय नहीं होता। टाईम लगता है। मेहनत लगती है। अन्त तक याद की यात्रा में रहना बड़ी मुश्किल है। नालेज में इतनी मेहनत नहीं लगती है याद की यात्रा में ही मेहनत लगती है। बाबा समझाते हैं बांधेली बाबा को बहुत ही याद करती हैं। कब बाबा से सम्मुख मिलें। बाप भी बार2 लिखते रहते हैं याद की यात्रा में रहना है। बांधेलियां यहां वालों से भी ऊंच पद पाती है। लव रहता है। घर के गंगा का इतना मान नहीं देते। ज्ञान सागर को याद करते2 तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप खत्म हो जाते हैं। बाप को जानना और बाप से बहुत लव ~~रहना है~~ रहना चाहिए। बाप जो बेहद की बादशाही देते हैं उनको कितना याद करना चाहिए। माया भी कम नहीं है उनकी लड़ाई बहुत है। पिछाड़ी में आकर फुर्फोस में प्यार रहता है। मिसाल भी है पतंग कोई तो फीदा हो जाते हैं कोई फेरी वहन चले जाते हैं। बच्चों को अन्दर में खुशी रहनी चाहिए हम बाप के बच्चे हैं। वर्ल्ड के प्रिन्स बनते हैं। खुशी रहनी चाहिए ना। परन्तु माया वह खुशी उड़ा देती है। इसको कहा जाता है माया से युध। दुनिया नहीं जानती। इसको ही युध का मैदान कहा जाता है। अपार खुशी होती है। हम ~~अप~~ अपार दुःखों से निकल अपार सुखों में जाते हैं। कालीदह से निकल क्षीर सागर में बच्चों को ले जाते हैं। सारी दुनिया कालीदह है। इसमें तक्षक रहते हैं। बच्चों को समझना चाहिए बाबा हमको कालीदह से निकल क्षीर सागर में ले जाने आये हैं। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

47